INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

छत्तीसगढ़ की नदियाँ : नई अर्थव्यवस्था में भाषा साहित्य और वाणिज्य का सांस्कृतिक विमर्श

संजू लदेर	डॉ राधा शर्मा
शोधार्थी	शोध निर्देशक
पी.एच. डी.	पी.एच.डी.
सी वी रमन विश्वविद्यालय करगी रोड कोटा बिलासपुर छत्तीसगढ़	सी वी रमन विश्वविद्यालय करगी रोड कोटा बिलासपुर

Mail Id ladersanju15@gmail.com mail Id drradhasharma

शोध सारांश:

छत्तीसगढ़ की नदियाँ केवल जल धारा नहीं बल्कि संस्कृति, लोकजीवन, और आर्थिक चेतना की धारा हैं। महानदी ,शिवनाथ,इंद्रावती, हसदेव, लीलागर नदी, पैरी और अरपा जैसी नदियाँ प्रदेश के सांस्कृतिक, वाणिज्यिक जीवन का मूल आधार रही है। भाषा और साहित्य में इन नदियों का स्वरूप प्रतीकात्मक है वे मातृत्व, सृजन, प्रेम, करुणा और निरंतरता की अभिव्यक्ति बनकर उभरती है, लोकगीतों, कविताओं, और लोककथाओं में नदी जीवन की गति और भावनात्मक प्रवाह का रुप लेती है। वहीं वाणिज्यिक दृष्टि से नदियाँ, कृषि, मत्स्यपालन, जलविद्युत और, पर्यटन के माध्यम से नई अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाती हैं।

नदियाँ लोक आस्था, परंपरा और सामुदायिक एकता की वाहक है, वे छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति को स्थायित्व और जीवंतता प्रदान करती हैं। परन्तु आधुनिक औद्योगीकरण और प्रदूषण ने इन नदियों की पवित्रता और अस्तित्व दोनों को चुनौती दी है। नई अर्थव्यवस्था में नदियों का महत्त्व केवल आर्थिक नहीं बल्कि भाषाई साहित्यिक और सांस्कृतिक पहचान से भी जुड़ा हुआ है। सतत विकास के लिए आवश्यक है कि नदियों को केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं बल्कि संस्कृति की धारा के रुप में देखा जाए।

महानदी को मां “मईया “कहकर संबोधित करने वाली लोक कथाएँ एवम करमा गीतों में नदी की धारा को जननी बताया गया है, जो भाषा की मौलिकता को जल की शुद्धता से जोड़ती है। नई अर्थव्यवस्था के परिपेक्ष्य में यह भाषाई धरोहर डिजिटल कंटेट एवम् सॉफ्ट वेयर के रूप में पुनर्जनन की संभावना रखती हैं।

समकालीन साहित्यकारों की कृतियों में नदी एक ओर सांस्कृतिक, साहित्यिक पुनर्जागरण का स्रोत होती हैं तो, दूसरी ओर पर्यावरणीय विस्थापन का दुखांत प्रतीक है। नवउदारवादी खनन नीतियों के कारण विस्थापित ग्रामों की पीड़ा को नदी की सूखती धारा में अभिव्यक्त करती हैं। नदी, तटीय, जल पर्यटन, हैंडलूम, ब्रांडिग में नदी प्रेरित डिजाईन एवम् ओ टी टी प्लेट फार्म पर नदी की पृष्ठभूमि, ये सभी नई अर्थव्यवस्था के सांस्कृतिक उद्यम के उदाहरण हैं। विकास के माडल में सांस्कृतिक जल प्रबंधन को समावेशित करना अनिवार्य है जो छत्तीसगढ की नदियों को संरक्षित करते हुए समृद्धि की नई गाथा रचेगी।

बीज शब्द:

नवउदारवादी, मौलिकता, पुनर्जनन, भाषाई धरोहर, सांस्कृतिक, विमर्श, अर्थव्यवस्था, पर्यावरणीय,जीवनधारा, समावेशित , हैडलूम, ब्रांडिग, पर्यटन, प्रवाह, प्रबंधन, वाणिज्यिक समाज सभ्यता, सजीव, विविध, उपजाऊ लोकमान्यता, छत्तीसगढ़ी भाषा, लोक काव्य।

परिचय :

छत्तीसगढ़ की धरती सदियों से जल जंगल और ज़मीन की त्रिवेणी रही है। यहाँ की नदियां केवल जलधारा नहीं बल्कि संस्कृति, संवेदना और सांस्कृतिक सभ्यता की जीवनधारा है। इन नदियों ने न केवल प्रदेश के कृषि और व्यापार को सींचा है बल्कि छत्तीसगढ़ी भाषा, लोक काव्य और जन संस्कृति को भी अपना अमृत प्रदान किया है। वर्तमान युग “नई

अर्थव्यवस्था का युग है जहाँ बाजार, व्यापार, और वाणिज्य समाज की गति को दिशा दे रहे हैं। परन्तु इस आर्थिक प्रवाह में भी संस्कृति और साहित्य की जड़े नदियों के समान स्थायी और जीवंत है, इसलिए छत्तीसगढ़ की नदियों को नई अर्थव्यवस्था के सन्दर्भ में समझना केवल भौगोलिक अध्ययन नहीं, बल्कि भाषाई, साहित्यिक और सांस्कृतिक विमर्श का अनिवार्य अंग है।

छत्तीसगढ़ की नदियां: भूगोल से संस्कृति तक

छत्तीसगढ़ का भूगोल जितना विविध है, उसकी नदियाँ उतनी ही संवेदन शील और सजीव है, महानदी, इंद्रावती, हसदेव, शिवनाथ, जोंक, अरपा, लीलागर ये नदियां जीवन के हर रूप को स्पर्श करती हैं। इन नदियों ने केवल खेतों को उपजाऊ नहीं बनाया, बल्कि लोकगीतों, कविताओं कथाओं, को भी जीवनदायी बनाया है लोकमान्यता है - "नदी मां समान है " जो प्यास बुझाती ही नहीं संस्कार भी देती हैं।

छत्तीसगढ़ की नदियाँ जनजीवन में धार्मिक आस्था, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक चेतना की वाहक रही हैं। शिवनाथ का जल भक्ति का प्रतीक है, महानदी मातृत्व का और इंद्रावती संघर्ष व स्वतंत्रता का प्रतीक बनती हैं।

जहाँ घंटियों का सरगम है, जहां वंदना की हैं वाणी।

महानदी की लहर- लहर में, बसती कविता कल्याणी।।

अमर सभ्यता सोई हुई है, महानदी की घाटी में।

मेरे पावन जन्मों का, पुण्य उदय इस माटी में।। १

भाषा और साहित्य में नदियों की उपस्थिति:

छत्तीसगढ़ी भाषा और हिंदी साहित्य, दोनों में नदियों की उपस्थिति भावात्मक और प्रतीकात्मक दोनों हैं। लोकगीतों में नदी का उल्लेख जीवन की गति, मिलन और विरह की धारा के रुप में होता है।

महानदी सत्वर सा लाद, कल कल करती हुई निनाद।

पदपद्म प्रक्षालन करने में, अविरलरत सतत अमन्द ।। २

काव्य में नदियां स्त्री स्वरूप में आती है -वे सहनशील है, निरंतर देती है, और समाज की प्यास बुझाती है। इसी प्रकार आधुनिक कवियों ने भी नदियों को संवेदना के रूपक के रूप में प्रस्तुत किया है

सांस्कृतिक विमर्श नदियां और लोक संस्कृति:

छत्तीसगढ़ की नदियां केवल भौगोलिक धारा नहीं बल्कि लोक संस्कृति की आत्मा है। मड़ई, जवारा, छेरछेरा और तीजा जैसे पर्व नदियों के किनारे ही जीवन्त होते है। गांवों की सभ्यता नदी के तटों पर विकसित हुईं -जहां जीवन मृत्यु, विवाह, श्राद्ध, आस्था सभी का संगम होता है।

नदियों के किनारे होने वाले हाट बाजार,घाट मेला और धार्मिक अनुष्ठान सांस्कृतिक एकता के जीवंत उदाहरण हैं।

महादेव घाट के मन्दिर मुझको,

आस्था की घंटियां सुनवाते।

मेरे मीठे पानी से पशु पक्षी मनु

अपनी प्यास बुझाते।। ३

वाणिज्यिक दृष्टिकोण से नदियों का महत्व:

वाणिज्यिक के छेत्र में नदियों की भूमिका बहुआयामी है। छत्तीसगढ़ में नदियों ने कृषि को जीवन दिया सिंचाई मछली पालन परिवहन और जल आधारित, उद्योगों के माध्यम से स्थानीय अर्थ व्यवस्था को संबल प्रदान किया।

नई अर्थव्यवस्था में जब औद्योगिकीकरण और बाजारवाद तेज़ी से बढ़ा, तब नदियां, जल विद्युत, पर्यटन और मत्स्य पालन के माध्यम से आर्थिक विकास का प्रमुख श्रोत बनीं। महानदी, हसदेव और इंद्रावती नदियां, नदी परियोजनाएं, सिंचाई और बिजली ऊर्जा का केन्द्र है।

मेरे हाथों पर खड़े हुए हैं

छोटे बड़े पुल पुलिए

मेरी रेती से खेल खेल खेल कर

छोटे बच्चे बड़े हुए।

नदियों के किनारे परिवहन का विकास हुआ है। वाणिज्यिक दृष्टि से नदियां स्थानीय जनता के जीवन स्तर को सुधारने में प्रमुख भूमिका निभाई है। परंतु आर्थिक विकास के साथ साथ पर्यावरणीय संकट भी गहराया है, प्रदूषण, अवैध खनन और अंधाधुंध औद्योगिकीकरण ने नदियों की पवित्रता को प्रभावित किया है, इसलिए आज आवश्यकता है कि हम नदियों को केवल आर्थिक साधन नहीं संस्कृति और जीवन के अभिन्न अंग के रूप में देखें।

जन जन की प्यास बुझाने वाली

आज मैं खुद प्यासी हूं

इस आस में

हांथ उठेंगें जन -जन के

बुझाने मेरी प्यास,

आस्था की प्यास, विश्वास की प्यास।।

नई अर्थव्यवस्था में भाषा व संस्कृति का स्थान:

नई अर्थव्यवस्था केवल वस्तुओं का आदान प्रदान नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक विचारों का भी आदान प्रदान है । इस दृष्टि से छत्तीसगढ़ की नदियां, भाषा और साहित्य के माध्यम से सांस्कृतिक संवाद को जीवित रखे हुए हैं।

महानदी की लहरें गीत गाती है, जीवन की कथा सुनाती है।

कभी शान्त कभी उन्मादिनी, सृष्टि की सखि सदा सनातनी।।

भाषा का प्रवाह नदियों के समान है, दोनों निरंतर गतिशील है। जब नदियां रूकती है, तो जल सड़ जाता है, वैसे ही जब भाषा रूकती है तो संस्कृति मुरझा जाती है।

साहित्य में नदियों से सम्बंधित अभिव्यक्तियां, कहावतें, मिथक और प्रतीक लोकजीवन को गहराई देते हैं। यह वही सांस्कृतिक विमर्श है, जो नई अर्थव्यवस्था में भी मनुष्य को अपनी मिट्टी से जोड़े रखता है

तेरी धारा में बहती है जीवन की गति,

तेरी गोद में पनपती है संस्कृति की प्रति ।

तेरी कथा सुन, मन में एक शान्ति भारती

तेरी महिमा में है, जीवन की सार्थक उपस्थिति । ६

सांस्कृतिक व पर्यावरणीय संतुलन नई अर्थव्यवस्था की तेज़ गति में नदियां संकट में है औद्योगिकीकरण ने नदी किनारों की प्राकृतिक और सांस्कृतिक छवि को बदल दिया है, परन्तु साहित्य और समाज ने बार -बार यह संदेश दिया है कि विकास तभी सार्थक है जब वन प्रकृति के साथ संतुलित हो

महानदी तेरा जल है जीवन की धारा

तेरी रक्तिम रंगत है, धरती का सारा

तेरी असीम सक्ति है, अदभुत कहानी

तेरे तट पर बसे जीवन की हर पानी।। ७

कवियों और पर्यावरण प्रेमियों ने नदियों को बचाने के लिए लेखन को हथियार बनाया है, जल हैं तो जीवन है

यह केवल एक नारा नहीं बल्कि छतीसगढ़ की नदियों की आत्मा का आह्वान है

कभी मां बनकर सहलाती थकी धरती की माथा

कभी बहन बनकर सुनती मन की हर व्यथा पाठा

तेरी कल कल है समय की अनंत पुकार

ओ नदी! तुम हो संस्कृति की अमर आधार।।

इसलिए नई अर्थव्यवस्था में सांस्कृतिक विमर्श का अर्थ केवल व्यापारिक दृष्टिकोण नहीं होना चाहिए अपितु सतत विकास की चेतना भी शामिल होना आवश्यक हो जाती है।

साहित्य का उद्देश्य चेतना का पुनर्जागरण :

भाषा और साहित्य का कार्य केवल वर्णन नहीं है साथ ही साथ पुनर्जागरण भी है साहित्य में नाड़ियों को लेकर जो संवेदना व्यक्त की गई है, वह समाज को उसकी जड़ों की याद दिलाती हैं। कवि की दृष्टि में नदी केवल जल नहीं बल्कि संघर्ष, समर्पण और जीवन की कविता है। नई अर्थव्यवस्था के इस युग में साहित्य का यहीं कर्तव्य है कि वह नदी की तरह बहता रहे निर्मल सतत और प्रेरक बनकर सदा आगे बढ़ती रहे।

निष्कर्ष:

नदियों ने भाषा को प्रवाह दिया है क्योंकि हमारी नदियां केवल जल की धारा नहीं बल्कि वे हमारी संस्कृति और अर्थव्यवस्था की धारा भी है उन्होंने साहित्य को प्रतीक दिया

वन की गोद से निकली ममता की धार

संग लाई मिट्टी की मधुर खुशबू और प्यार

पत्थरों से टकराकर गाती सुरमयी तान

मानों कह रही हो मैं हूं जीवन की जान।।

नई अर्थव्यवस्था के इस युग में जब मनुष्य लाभ की भाषा बोलने लगा है तब भी नदियां हमें यह सिखलाती हैं –

"देना ही जीवन है, बहना ही अस्तित्व है।"

नदियों का संरक्षण केवल पर्यावरण का प्रश्न नहीं बल्कि भाषा ,साहित्य, वाणिज्य और सांस्कृतिक संतुलन का प्रश्न है। जब तक नदियां बहती रहेंगी, तब तक छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक आत्मा भी बहती रहेंगी।

नदी बहती है अनवरत, मन के गहरे तटों को छूकर।

कंकड़ पत्थर को गढ़ती, जीवन को नव रूप देती।।

छतीसगढ की नदियाँ नई अर्थव्यवस्था में अपनी सांस्कृतिक व साहित्यिक पहचान बनाए हुए हैं। वे हमे यह सिखाती हैं कि प्रगति और परंपरा एक दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं।

भाषा की धारा साहित्य की संवेदना और वाणिज्य की ऊर्जा इन तीनों का संगम ही छत्तीसगढ़ की नदियों का सच्चा सांस्कृतिक विमर्श है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. मुकुटधर पाण्डेय ,हितकारिणी,महानदी कविता कोश 1919
2. मुकुटधर पाण्डेय पूजाफूल ब्रह्म प्रेस इटावा 1916
3. शरद चंद्र गौड़ प्यासी इंद्रावती यश पब्लिकेशन दिल्ली 2013
4. छत्तीसगढ़ विस्तृत अध्ययन अरिहंत पब्लिकेशन इंडिया लिमिटेड फोर्थ एडिशन 2021 ।
5. प्रो अश्वनी केशरवानी छत्तीसगढ़ की जीवन दायनी महानदी रचना आलेख राघव डागा कालोनी चांपा (छ. ग.) 2024
6. चंद्राकर डॉ पुरुषोत्तम 2023 कहानी अरपा की संकल्प पब्लिकेशन ।
7. छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय डॉ बलदेव पृष्ठ क्र.136

• **Copyright & License:**
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.